शोधार्थी : **प्रेमवती**

शोध–निर्देशक : **प्रो. कृष्ण कुमार कौशिक**

विभाग : **हिन्दी**

विषय : **प्रतिशील आलोचकों की भक्ति काव्य सम्बंधी आलोचना का तुलनात्मक अध्ययन।**

शोध–सार

पांच शीर्ष शब्द : प्रगतिशील, मध्यकालीन ऐतिहासिकता, जनवादी, सामाजिक सरोकार, सामन्त विरोधी मूल्य।

भक्ति–आन्दोलन और भक्ति–काव्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, जनवादी स्वरूप, सामाजिक सरोकार, सामन्त विरोधी मूल्य, भौतिक–आर्थिक आधार को उजागर करने में प्रगतिशील आलोचकों की आलोचना का विशेष महत्व है। भक्ति–आन्दोलन और भक्ति–काव्य के इन विविध आयामों को प्रगतिशील आलोचकों की आलोचना के अध्ययन द्वारा स्पष्ट किया गया है।

प्रथम अध्याय में प्रगतिशील से अभिप्राय और साहित्य में प्रगतिशील के अर्थ को स्पष्ट करते हुए 'प्रगतिशील और प्रगतिवाद' के संबंध को स्पष्ट किया गया है। इसी क्रम में 'हिन्दी आलोचना में प्रगतिशील चेतना के स्वरूप और विकास' पर प्रकाश डालते हुए 'मार्क्सवादी सिद्धान्त और साहित्य' पर भी विचार किया गया है।

द्वितीय अध्याय को दो उपशीर्षकों में विभक्त कर भक्ति–आन्दोलन और भक्ति–काव्य के संबंध में रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना का अध्ययन किया गया है।

हिन्दी आलोचना में वैज्ञानिक और आधुनिक दृष्टिकोण से भक्तिकाव्य और भक्ति आन्दोलन को देखने का सार्थक प्रयास रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पद्धति में मिलता है। रामचन्द्र शुक्ल ने आलोचना की गुण–दोष प्रवृत्ति से भिन्न 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' को युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में, रचनाकार की विचारधरा, उनकी अन्त:प्रवृत्तियों की छानबीन के आधार पर मूल्यांकित किया। प्रत्येक काल की प्रवृत्तियों को उस युग विशेष के सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने की दृष्टि का विकास रामचन्द्र शुक्ल में मिलता है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी का इतिहास चिन्तन और आलोचकीय दृष्टिकोण पूर्ववर्ती रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि का परिष्कार और विकास करते हुए विकसित हुआ। वह न केवल अतीत को वर्तमान से जोड़ने का सृजनात्मक कार्य करते हैं, बल्कि सांस्कृतिक–समाजशास्त्री आलोचना दृष्टि को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करते हुए, जिसके केन्द्र में मानवतावादी दृष्टि है, उसकी विवेचना भी करते हैं।

रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा भक्ति आन्दोलन और भक्ति–काव्य को 'लोक–वृत्त' और 'मानवतावादी' अवधरणा के आधार पर मूल्यांकन करना, उनकी आलाचेना के प्रगतिशील स्वरूप को व्याख्यायित करता है।

तृतीय अध्याय में भक्त–कवियों (कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा) के संबंध में प्रगतिशील आलोचकों की आलोचना का अध्ययन किया गया है। इस संबंध में आलोचकों की भक्त–कवियों पर लिखित रचनाओं का विशेष महत्व है।

मध्यकालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समाजशास्त्री पद्धति के आधर पर कबीर के संबंध में जहाँ रामविलास शर्मा ने रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना का विकास किया। वहीं मध्यकालीन सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में प्रगतिशील आलोचना दृष्टि को अपनाते हुए नामवर सिंह ने कबीर के संबंध में हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि का विकास किया।

सूर काव्य के मूल्यांकन में रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना का महत्व है। सूर संबंधी इस अध्ययन का विकास रामविलास शर्मा और मैनेजर पाण्डेय की आलोचना में संभव हो सका है। जहाँ रामविलास शर्मा ने सूर के संबंध में रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना का विकास किया, वहीं मैनेजर पाण्डेय ने सूर के संबंध में रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी के विवेचना से आगे बढ़कर सूर–काव्य के नवीन प्रगतिशील तत्वों की खोज की, जो सूर को किसान–जीवन और सामन्तीय विरोधी मूल्यों का प्रतिनिधि कवि सिद्ध करते हैं।

तुलसी के संबंध में रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना का विकास न केवल रामविलास शर्मा की आलोचना में दिखाई देता है, बल्कि तुलसी के दार्शनिक और धर्मिक पक्षों की लौकिक धरातल पर व्याख्या करने, तुलसी की भक्ति के आर्थिक और सामाजिक पक्षों को उजागर करने, तुलसी काव्य के सामन्तीय विरोधी मूल्यों को बताने और भक्ति आन्दोलन में तुलसी के जनवादी स्वरूप को स्थापित करने में रामविलास शर्मा का महत्वूपर्ण योगदान है।

मार्क्सवादी दृष्टि से तुलसी–साहित्य का मूल्यांकन में रमेश कुन्तल मेघ का प्रमुख योगदान है। उन्होंने तुलसी–साहित्य को मध्यकालीन इतिहास, समाज और दर्शन की मिथकीय आलोचना दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन किया है। रमेश कुन्तल मेघ ने तुलसी के माध्यम से मध्यकालीन भावबोध एवं मूल्य बोध की पहचान कराई और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उसका मूल्यांकन किया। तुलसी में मिथकीय चेतना के रूप में उसके सामाजिक महत्व को रेखांकित किया।

परम्परा के मूल्यांकन के क्रम में मार्क्सीय समाजशास्त्री की दृष्टि से विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा लिखित पुस्तक 'लोकवादी तुलसीदास' का प्रमुख स्थान है। जिसमें उन्होंने 'लोकवाद' की कसौटी पर तुलसी–साहित्य का मूल्यांकन किया है। विश्वनाथ त्रिपाठी ने तुलसी के धार्मिक तथा दार्शनिक पक्षों की अपेक्षा तुलसी युगीन नैतिक और सामाजिक तत्वों को 'लोकवादिता' की कसौटी पर मूल्यांकन किया।

चतुर्थ अध्याय में मध्यकालीन किसान चेतना, निर्गुण–सगुण विवाद और हिन्दी भाषा के विकास को मध्यकालीन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भौतिक, आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर मूल्यांकन किया गया।

पंचम अध्याय समकालीन प्रगतिशील आलोचना का स्वरूप और 'परम्परा के मूल्यांकन' में सीमाओं को रेखांकित करते हुए स्त्री–विमर्श तथा दलित–विमर्श के संबंध में भक्ति–काव्य के महत्व को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

मध्यकालीन भक्ति–काव्य को वैज्ञानिक और आधुनिक दृष्टिकोण से मूल्यांकित करने में हिन्दी आलोचक रामचन्द्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी का विशेष योगदान है। रामचन्द्र शुक्ल ने मध्यकालीन युग संदर्भ में 'लोकमंगल की भावना' के आधार पर भक्ति–काव्य को देखा और हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'मानवतावादी विचारधारा' के आधार पर भक्ति–काव्य की परम्परा को एतिहासिक संदर्भों की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर मूल्यांकित किया। दोनों की आलोचना दृष्टि भक्ति–काव्य को 'लोक–मानव की भाव–भूमि' के आधार पर मूल्यांकित करने की एक नवीन दृष्टि प्रदान करती है। हिन्दी आलोचना के इन प्रगतिशील तत्वों को ग्रहण करती हुई, प्रगतिशील आलोचना ने न केवल विकास किया बल्कि मार्क्सीय पद्धति के आधार पर, भक्ति–काव्य के मूल्यांकन के संबंध में नवीन प्रगतिशील तत्वों को भी उजागर किया। भक्ति आंदोलन के बहुआयामी स्वरूप को उजागर करने में प्रगतिशील आलोचना का विशेष महत्व हैं। प्रगतिशील आलोचकों ने न केवल परम्परा के महत्व की पहचान कराई, बल्कि उसके सामाजिक सरोकारों और उसके जनवादी स्वरूप की विवेचना हमारे समक्ष प्रस्तुत की। जो न केवल हमारे वर्तमान समाज के लिए महत्व रखती है, बल्कि भावी पीढ़ी के लिए भी मूल्यवान है।